मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 10

MTT-041

सिंधी-हिन्दी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

एम.टी.टी.-041 : सिंधी-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनः-सृजन

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के सामने अंक दिए गए हैं।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **250-300** शब्दों में दीजिए : 15×2=30

   (i) 'सिंधी हिंदी भाषा की सामाजिक और सांस्कृतिक समानताएँ' विषय पर लेख लिखिए।

   (ii) 'कहावतें एवं मुहावरे भाषा के अलंकार हैं।' विवेचना कीजिए।

   (iii) सिंधी-हिंदी शब्दावली में शब्द स्तर पर समानताएँ और असमानताएँ लिखिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

(i) आईंदो

(ii) आखणु

(iii) कूचु

(iv) ज़मानो

(v) दानिश

(vi) बदज़ेबो

(vii) मुहिम

(viii) वंड

(ix) सामूंडी

(x) हासिदु

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिन्दी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

(i) खाक

(ii) जमाना

(iii) दौरान

(iv) प्रस्थान

(v) बाध्य

(vi) भरम

(vii) मायावी

(viii) रिवाजु

(ix) विच्छेद

(x) टिकाना

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** कहावतों/मुहावरों का सिंधी से हिंदी/हिंदी से सिंधी में अनुवाद करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 10

(i) पाण मरे पोईमरी वेई दुनियां

(ii) हिक हथी ताड़ी न वजूंदी आहे

(iii) मूरीअ खाधे खा बुख लहे ?

(iv) पऱो करणु

(v) नजर घटिजणु

(vi) उड़ती चिड़िया पहचानना

(vii) जीभ पकड़ना

(viii) सुनी अनुसुनी करना

(ix) आपका जूता आपका सिर

(x) एक परहेज़ सौ इलाज

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 5

(i) तव्हां सुबुह वारे क्लास में पढ़ंदा आहियो या शाम वारे में ?

(ii) छा तण्हां खे वक्त सर उहिदे में तरक्की मिलंदी आहे ?

(iii) सिंधी समाज चालीहे जो मेलो मल्हाईंदो आहे।

(iv) हिन चौंक जो नालो स्वामी शांति प्रकाश आहे।

(v) मां रस्तो भ़लिजी दियो आहियां मेहरबानी करे मुंहिजी मदद करियो।

(vi) तण्हां खे साल में घणनि डोहंनि जी मोकल मिलंदी आहे ?

(vii) सिंधी बो़लीअ जे विकास लाइ मर्कजी सरकार हिकु इदारो बर्पा कयो आहे।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 5

(i) मैं सरकारी कार्यालय में काम करता हूँ।

(ii) आपको सबसे अच्छा व्यंजन कौन-सा लगा ?

(iii) कृपया शाम को भोजन मेरे कमरे में भिजवा दें।

(iv) मैं अपने कपड़े प्रेस करवाना चाहता हूँ।

(v) कल के लिए अग्रिम बु़किंग की जा सकती है।

(vi) भगति लोक नृत्य की परम्परागत पोशाक क्या है ?

(vii) मैं आपके शहर के ऐतिहासिक स्मारक देखना चाहता हूँ।

7. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) बिए डोंहुं डिठुमि त खिलनाणी साहिब जे घर खे तालो लगो पियो हो। मूं समुझियो किथे बाहिर विया हूंदा। शाम ताईं अची वेंदा। घर में कमु कन्दड़ माई जमुना खां बि काके लाइ पुछियुमि। पर हुन खे उन्हनि बाबति का बि खबर कोन हुई। ब डोहं गुज़िरी विया। घर ते उहो ई तालो। कंहिं खे का खबर कोन। हिक गाल्हि जरूर थी त काके जे घर मां अजीब किस्म जी बांस अची रही हुई। इहा शिकायत बियनि बि सोसायटीअ जे सेक्रेट्रोअ सां कई। आखिर टिएं डोंहुं पोलीस में रिपोर्ट कई वेई। काके जे घर जो तालो भगो वियो। अंदर हो काके ईश्वर खिलनाणीअ जो लाशु, काके खे घुटो डेई मारियो वियो हो। घर मां पोलीस खे अनेक सबूत मिलिया, त घर में को आतंकवादी रहियलु हो, हिकु पिस्तोल, कुझु गोलियूं, कुझु दस्तावेज़ ऐं फोटा डिसी पोलीस जी निंड हरामु थी वेई। पोलीस

सभिनी खां पुछा गाछा कई पर केरु जवाबु डे। कंहिं खे कुझु जाण हुजे त जवाबु डे न ! पोलीस जी जाँच त जारी रहंदी। मां पंहिंजे घर जो दरवाज़ो बंद करे पिए पाण खां पुछियुमि, ऐं पिए पंहिंजी धर्मपत्नी रूपा खां पुछियुमि त भाई साहब जहिड़ो माण्हू छा आतंकवादी थी सघे थो ! रूपा जो हिकु ई आलापु आहे त चडायूं ऐं बुरायूं हर इन्सान में थियनि थियूं; पर भाई साब जा करतूत डिसी मुंहिंजो त इन्सानियत मां विश्वासु ई निकरी वियो आहे, कंहिं ते विश्वासु कजे ! हाल त वेचारो काका राह वेंदे कुसजी वियो। मां बि हैरानु परेशानु आहियां। काश मां हुनजे गुफ़्ते खे समुझी सघां हां! जडहिं हू सभ खां सुवालु करे रहियो हो, "डू यू नो! हू एम आइ ?"

(ख) लोक कथा में ब तत्व अहमियत भरिया आहिनि। हिक आहे उन जी पाड़-जड़, बियो आहे उन जो शैली।

शैली लोक कथा जो बाहिरियों तत्व आहे। शैली लोक कथा जो शरीर आहे। पर उन जी आत्मा, चेतन तत्वु, प्राण तत्वु आहे पाड़। शैलीअ जो सुभाउ तब्दील वारो आहे। मकान, जाइ, काल, वक्तु शैलीअ खे छुही वठंदा आहिनि ऐं उन में बदलाउ

आणींदा आहिनि। कहाणी बुधाईंदड़ शैलीअ में फेर-फार करे सघंदो आहे, पर Motif-आधार बिजु लोक कथा जो दाइमी तत्वु आहे, जंहिं में कहाणी बुधाईंदड़, जाइ, मकान, वक्तु या माहोल बदिले नथो सघे। मसलन् उर्वशी-पुरुरवा जी कथा ऋग्वेद में मिले थी। इहा ई कथा शतपथ ब्राह्मण, श्रीमद्भागवत, देवी भागवत वग़ैरह में बि मिले थी। कवी कालीदास जे नाटक "विक्रमोर्वशीयम्" जो आधारु बिजु बि हीअ कथा ई आहे, त वरी राजस्थानी लोक कथा "धांधलजी नी कथा", कच्छ सिंध ऐं सौराष्ट्र जी कथा "होथल पद्मिणी" जो असलु पिणि उर्वशी-पुरुरवा जी कथा ई आहे त वरी फ्रांस जी हिक लोक कथा आहे "मेलो सेनां" जंहिं जो बुनियाद पिणि हीअ कथा ई आहे।

8. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) यहाँ से कुछ ही दूरी पर नए सक्खर में तिलक स्कूल है। मैं वहाँ पढ़ाई करता हूँ। आज छुट्टी है, इसलिए अभी तक बगीचे में हूँ। 'तुम गले में रस्सी का फंदा डालकर फांसी का खेल खेलते हो, इस खेल की तुम्हारे परिवारवालों को जानकारी है ? क्या यह बात उन्हें पसंद आएगी ?'

'हाँ सभी जानते हैं। मैं जब भी घर के काम से निजात पाता हूँ, तब घर में भी दरवाजे पर रस्सी लटकाकर, यह अभ्यास करता हूँ। पहले तो यह देखकर घरवाले भी डर गए थे, परन्तु मेरे यह समझाने पर कि मैं यह अनुभव करना चाहता हूँ कि देश की आज़ादो के लिए वीरों को किस तरह फाँसी पर लटकाया जाता है, तब उन्हें क्या अनुभूति होती है ? भगत सिंह ने फांसी क फंदे पर क्या अनुभव किया ? पहले तो मेरी बात उन्हें समझ में ही नहीं आई—इस खेल में कितने खतरे हैं उन्होंने समझाया परंतु मेरे दृढ़ निश्चय के सामने वे झुक गए। घर में तो यह खेल खेलता हूँ। आज अकेले बगीचे में प्रयास करने को मन किया, इसलिए रस्सी सहित यहाँ पहुँच गया।'

'अच्छा, बहुत अच्छा, तुम्हें देश के लिए लड़कर मर मिटना है। यह बहुत अच्छी और स्वागत योग्य बात है। पर एक बात का ध्यान रखना कि इस खेल में अनुभव प्राप्त करते-करते कोई दुर्घटना न हो जाए। जीवन अत्यन्त बहुमूल्य है, उसे यूँ ही व्यर्थ खत्म मत करना। देश के लिए संभालकर

रखना। तुम और तुम जैसे अनेक बालक देश की अमानत हो, भविष्य हो, आज़ादी के सिपाही हो। मुझे अपने विद्यार्थियों पर विश्वास और गर्व है।'

(ख) 1920-21 में असहयोग आंदोलन के चलते हजारों विद्यार्थियों और सैकड़ों शिक्षकों ने सरकारी विद्यालयों का त्याग किया। जिसके बाद सिंध में जगह-जगह पर स्वदेशी शिक्षा केंद्रों की स्थापना की गई। कराची के प्रसिद्ध डी. जे. सिंध कॉलेज के विद्यार्थियों ने भी शिक्षा का त्याग किया। उनमें कई ऐसे विद्यार्थी थे जिन्होंने जीवन में फिर कभी शिक्षा के लिए विद्यालयों का मुँह नहीं देखा और वे जीवन भर देश-सेवा के लिए समर्पित हो गए। उनमें कुछ प्रमुख नाम थे—श्री हीरानंद करमचंद, उनके भाई श्री शेवकराम, श्री केसूमल झांग्याणी, श्री नेंवंदराम विशनदास, श्री चोइथराम वलेचा, श्री आलम गिदवाणी, श्री राम बी. मोटावाणी और श्री निहचलदास हिमथसिंघाणी आदि।

शिकारपुर के एक युवक लीलाराम फेरवाणी, बंबई की ग्रांट मेडीकल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर, अपने जन्मस्थान शिकारपुर लौटकर असहयोग

आंदोलन को गति प्रदान करने लगे। इनके जोशीले भाषणों से प्रभावित होकर कई विद्यार्थी, सरकारी विद्यालयों को त्याग कर स्वदेशी विद्यालयों में पढ़ना शुरु किया। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ जाने के कारण शिकारपुर में दो-दो स्वदेशी विद्यालय खुल गए। एक के प्रधानाचार्य श्री ताराचंद गाजरा और दूसर के प्रधानाचार्य श्री लीलाराम फेरवाणी बने। श्री लीलाराम फेरवाणी, एक अच्छे कवि भी थे, जिनकी कविताओं और गीतों की गूँज आज भी गूँज रही है—

सब हक, बेशुमार दौलत और दुनियाँ मिली तो क्या हुआ।
अगर न मिला स्वराज, और सब कुछ मिला तो क्या हुआ॥